इकाई III – वस्त्र एवं परिधान

21. वस्त्र का व्यक्तित्व से सम्बन्ध

Clothing and Personality

वस्त्रम ानवक ीम ूलभूतअ ावश्यकताओंम ेंस ेए कह ै ाप्र्त्येक व्यक्ति अपना तन ढकने और बाहरी आपदाओं से खुद को बचाने के लिये वस्त्रों का उपयोग करता है। वस्त्रों का मानव-मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसलिये जीवन के सामान्य विकास के लिये उचित प्रकार के वस्त्रों का होना आवश्यक है। वस्त्र व्यक्ति के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करता है और प्रभावित भी करता है। उचित प्रकार के वस्त्रों से बालक, युवा, प्रौढ़ और बुजुर्गों सभी में आत्मविश्वास आता है, जो व्यक्तित्व के विकास के लिये अनिवार्य है। वस्त्रों की स्वच्छता, सुन्दरता, समयानुकूलता, रंग, किस्म, स्टाइल तथा फैशन की अनुकूलता का हम सभी के व्यक्तित्व पर सुन्दर प्रभाव पड़ता है। सुरुचिपूर्ण परिधान-संयोजन सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रियदर्शी एवं ग्राह्य बना देता है।

सुन्दर और उचित परिधान धारण कर व्यक्ति अपने आप में प्रसन्न हो उठता है फलस्वरूप उसका प्रभाव आचार-व्यवहार एवं उसके तौर-तरीकों पर ऐसा पड़ता है कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही आकर्षक हो जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि व्यक्ति का परिधान उसके व्यक्तित्व के विकास की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है जिसके अभाव में व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास की कल्पना सम्भव नहीं है। मानव की दैनिक आवश्यकताओं में वस्त्रों की आवश्यकता महत्त्वपूर्ण है। प्रतिदिन व्यक्ति वस्त्रों का चुनाव मौसम, उपलब्धता, अवसर, समय और आवश्यकता के आधार पर करता है।

वस्त्र-परिधानों के कार्य मुख्य रूप से दो तरह के होते हैं-

(i) प्राथमिकक ार्य: -श ारीरक ोब ाहरीव ातावरणस ेस ुरक्षाए वं आराम।

(ii) द्वितीयक कार्य :- पहचान, मानसिक सन्तोष, सामाजिक स्तर, प्रशंसा, विविधता आदि।

(i) प्राथमिक कार्य :- वस्त्रक ाअ तिमहत्त्वपूर्णक ार्यश ारीरक ो ढकना है साथ ही शरीर को बाहरी वातावरण, हवा, बरसात, धूप, सर्दी और गर्मी से सुरक्षित रखने में वस्त्र महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। शरीर को सामान्य स्थिति में रखने के लियेव स्त्रोंक ास हीच ुनावक रनाच ाहिये,ज ैसे-सर्दीके मौसम में शरीर को ठण्ड से बचाने के लिए ऊनी वस्त्र एवं गर्मी में ठण्डक हेतु सूती वस्त्र पहनने चाहिये। उचित वस्त्रों के पहनने से शरीर आरामदायक स्थिति में रहता है। व्यक्ति के दैनिक कार्यों में, जैसे-विश्राम, नहाना, ओढ़ना आदि के लिये भिन्न-भिन्न वस्त्रों का उपयोग किया जाता है।

(ii) द्वितीयक कार्य :- वस्त्रों द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भवहै ,ज ैसे-सामाजिक,म नोवैज्ञानिकअ ौरश ारीरिक। व्यक्ति के वस्त्र व्यक्ति के बारे में ढेर सारी जानकारियां स्वत: ही दे देते हैं। जैसे-व्यवसाय कौन-सा है, यथा-वकील की पहचान उसके काले कोट के कारण हो जाती है। स्त्री-पुरुष का भेद भी परिधान आसानी से कर देते हैं-पैंट-शर्ट पुरुष एवं साड़ी-सूट स्त्री की पोशाक है। पोशाक व्यक्ति की पहचान बन गई है। उचित, सुन्दर एवं सुरुचिपूर्ण परिधान-संयोजन, व्यक्ति अपनी ओर ध्यान आकर्षित करवाने में सफल रहता है, इससे उसमें आत्मविश्वास एवं सन्तोष प्राप्त होता है। इसके विपरीत कई बार अज्ञानतावश और धनाभाव में उचित वस्त्र किशोर, युवा नहीं पहन पाते ऐसे में उनमें हीनभावना आ जाती है, जिसके कारण वे मानसिक रूप से असन्तुष्ट होकर समस्यात्मक व्यवहार करने लगते हैं। परिधान के सामाजिक महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। वस्त्रों के माध्यम से भी व्यक्तिक ास ामाजिकस् तरऊँ चाउ ठताह ैत थास माजम ें उसकीप्र तिष्ठाभ ीव स्त्रह ीब नातेह ैं।फ ैशनके अ नुरूप, व्यक्तित्व के अनुकूल, सुन्दर शैली वाले तथा स्वच्छ वस्त्र पहनने से मन को प्रसन्नता व सन्तोष प्राप्त होता है और व्यक्ति प्रशंसा का पात्र बन जाता है। समयोचित सुन्दर वस्त्र-परिधान व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन एवं विविधताएं लाते हैं। गहरे

और चटक रंग के वस्त्र उदास व्यक्ति का मन भी खुश कर देते हैं।

अतः ये कहना गलत न होगा कि व्यक्तित्व को आकर्षक व प्रभावशाली बनाने में वस्त्रों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

पिछली कक्षा में हमने वस्त्रों को रंगने और रंगाई की प्रक्रिया के बारे में पढ़ा, लेकिन रंगाई के अलावा वस्त्रों पर छपाई भी की जाती है। वस्त्र की आकर्षक छपाई करने हेतु डिजाइन व नमूने की आवश्यकता होती है। वस्त्र सुन्दर लगे इसके लिये डिजाइन या नमूना कैसा हो, कितना बड़ा हो, किस आकृति का हो, रंग कौन-सा हो? आइये, हम देखते हैं कि एक नमूना या डिजाइन किन बिन्दुओं से प्रभावित होता है या कहें कि कला के तत्त्व और सिद्धान्तों का सही उपयोग किया जाये तो एक नमूना और डिजाइन आकर्षक बन जाती है।

I कला के तत्त्व :-

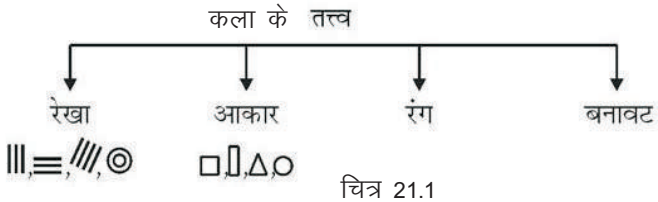

चित्र 21.1

1. **रेखा**–वस्त्र-परिधानों पर सुन्दर एवं आकर्षक डिजाइन बनाने के लिये रेखाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भिन्न-भिन्न रेखाओं को जोड़कर डिजाइन बनाये जाते हैं। वस्त्रों पर नमूनों और डिजाइन की विविधता के लिये विभिन्न रेखाओं का इस्तेमाल किया जाता है जिससे तरह-तरह के नमूने बनाये जा सकें। मुख्य रूप से चार रेखाओं का उपयोग किया जाता है :

(i) **लम्बवत रेखा :** यह रेखा लम्बाई में वृद्धि करती है। इसकी यह विशेषता है कि इनके सहारे दृष्टि ऊपर से नीचे की ओर और नीचे से ऊपर की ओर गतिमान होती है। इन रेखाओं की, परिधान में प्रधानता व अधिकता रखने से व्यक्ति की लम्बाई अधिक होने का आभास देती है और ठिगने व्यक्ति को ऐसे वस्त्र पहनने चाहिये जो उन्हें लम्बा दिखाये।

(ii)**समतल रेखा :-** यह रेखाएं चौड़ाई की दिशा में समतल या लेटी हुई होती है। यह स्थिरता व विश्राम का भाव उत्पन्न करती है। इन पर दृष्टि दाहिने छोर से बाएँ छोर की तरफ तथा बाएँ छोर से दाहिने छोरक ेिअ ेरग तिमानह ेतीह ै ।य ेर ेखाएंल म्बाईक ेक म करती-सी दिखती है साथ ही चौड़ाई में वृद्धि का आभास देती है। अतः समतल रेखा वाले वस्त्र मोटे लोगों को नहीं पहनने चाहिये जबकि दुबले-पतले व्यक्ति को इन रेखाओं के वस्त्र सामान्य दिखाते हैं।

(iii)**तिरछी रेखा :** यह रेखाएं गतिशीलता, शालीनता एवं नमनीयता का भाव उत्पन्न करती हैं। ढलुआं और तिरछी दिशा में आने-जाने वाली ये रेखाएं चौड़ाई को कुछ कम तथा लम्बाई को बढ़ाती हुई प्रतीत होती है। इन रेखाओं के प्रयोग से वस्त्रों की सुन्दरता बढ़ जाती है। यह सभी वस्त्रों व परिधानों पर शोभा देती है।

(iv)**वृत्त रेखा/वक्र रेखा :** ये रेखाएं घुमावदार होती हैं। ये रेखाएं प्रसन्नता, कोमलता, सौम्यता, सौन्दर्य एवं समृद्धि की परिचायक होती हैं। इनका प्रयोग वस्त्र सज्जा में फूल, पत्ते, अर्धवृत्त या अन्य वृत्ताकार डिजाइन बना कर इस्तेमाल किया जाता है।

2. **आकार** – आकार कला का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। विभिन्न रेखाओं के संयोजन से अलग-अलग आकार बनाये जाते हैं। वस्त्रों पर आकर्षक डिजाइन उत्पन्न करने के लिये विभिन्न आकारों का उपयोग किया जाता है। वस्त्र पर बने नमूनों में ये आकार मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं-

(i) **वर्गाकार :-** इस प्रकार की आकृति बनाने के लिये लम्बवत और समतल रेखा एक ही नाप की होती है और डिजाइन आकर्षक बनते हैं।

(ii)**आयताकार :-** इस आकार के डिजाइन में आमने-सामने की लम्बवत व समतल रेखा बराबर होती है।

(iii)**त्रिभुजाकार :-** डिजाइन के इस आकार में एक भाग समतल एवं दो तिरछी रेखाओं के संयोजन से बनाते हैं।

(iv)**वृत्ताकार :-** इसमें डिजाइन का आकार गोल होता है। कई वृत्ताकार Curred डिजाइन में इसका उपयोग होता है।

3. **रंग :-** पिछली कक्षा में आप रंगों का विस्तृत अध्ययन कर चुके हैं। परन्तु कला के तत्त्वों में रंग अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है इसलिये इस रूप में भी रंग के बारे में जानना आवश्यक है। परिधान में रंग प्राण की तरह होते हैं। रंगों की वजह से ही वस्त्र जीवन्त और आकर्षक लगते हैं। वस्त्रों में नमूना बनाते समय रंग-संयोजन का अपना एक विशिष्ट एवं अनोखा स्थान है। रंगों का प्रयोग हमारी व्यक्तिगत रुचि पर भी निर्भर करता है। वस्त्रों में रंगों का आयोजन व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करते हैं, क्योंकि वे उसके व्यक्तित्व को उभारने में शक्तिशाली माध्यम हैं। कितने भी सुन्दर और उचित गुण व्यक्तित्व में हो, फिर भी वस्त्र-परिधान का रंग अगर उन्हें फबने वाला न होगा तो व्यक्तित्व को हानि सहन करनी पड़ती है। वस्त्र में रंगों की गहराई, व्यक्ति की त्वचा का रंग, आयु, आकार व्यक्तित्व से प्रभावित होता है इसलिए उचित रंगों का संयोजन, पहनने वाले को एक विशेष आत्मविश्वास प्रदान करता है। फैशन के अनुसार भी रंगों का प्रयोग रुचिकर होता है। रंगों का सौन्दर्यात्मक प्रभाव के साथ संवेगात्मक प्रभाव भी होता है। व्यक्ति पर विभिन्न रंगों का विभिन्न प्रभाव होता है,

जैसे–

लाल रंग– उत्सुकता, जोश, उत्तेजना, खतरा, ऊर्जावान

पीला रंग– खुशी, खिला हुआ, जोश

हरा– ठंडक, शीतलता, संतोष, विश्राम, सुहावना, मित्रता

नारंगी– प्रसन्नता, उल्लास, उत्साह व जोश

नीला– शान्त, गंभीर, शीतल व विशाल

जामुनी– प्रभावी, चमकीला व सन्तोष

सफेद– स्वच्छ, शुद्ध, ठण्डा, शान्ति और मौन

काला– पुराना, शोक, अवसाद, विरोध प्रदर्शन

4. बनावट : बनावट कला के तत्त्वों में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। वस्त्र के बाहरी स्वरूप और स्पर्श संबंधी गुण को 'बनावट' कहते हैं। वस्त्र की सतह चिकनी, खुरदरी, रोएंदार, चमकीली, मुलायम, कड़क आदि होती है, जिसको स्पर्श करके व देखकर आसानी से पता लगाया जा सकता है। नमूना बनाते समय वस्त्र की बनावट का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये। बनावट में हमेशा एकरूपता होनी चाहिये, जैसे– मखमल पर मखमल का पैबन्द ही अच्छा लगता है। खुरदरी सतह पर खुरदरी सतह के डिजाइन अच्छे लगते हैं, न कि खुरदरी सतह पर साटन का डिजाइन।

उपरोक्त डिजाइन/कला के तत्त्वों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वस्त्र पर डिजाइन या नमूना रेखा, आकार, रंग और बनावट के सन्तुलित संयोजन से बनते हैं। इनका अस्त–व्यस्त संयोजन नमूने को आकर्षक नहीं लगने देते।

जिस प्रकार किसी भी डिजाइन को बनाने के लिये कला के तत्त्व महत्त्वपूर्ण हैं उसी तरह से डिजाइन के सिद्धान्त भी अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण हैं।

डिजाइन के सिद्धान्त :–प्रत्येक प्रकार की कला के कुछ सिद्धान्त होते हैं। वस्त्र बनाना और वस्त्र पर डिजाइन बनाना, दोनों ही अपने–आप में एक कला है। इन सिद्धान्तों का अनुकरण आधारभूत मानकर करना चाहिये। इन सिद्धान्तों को अनम्य नहीं मानना चाहिये। इनका उपयोग प्रचलित फैशन तथा विशिष्ट शरीर–आकृति के अनुरूप करना चाहिए इनका उचित संयोजन डिजाइन या नमूनों को नवीनता व वस्त्र को सुन्दरता प्रदान करते हैं। ये निम्नलिखित हैं–

1. अनुपात : अनुपात डिजाइन का सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत एक ही डिजाइन या नमूने में विभिन्न भागों का आपस में सम्बन्ध अनुपात में देखा जाता है, जैसे–आकार, बनावट, रंग आदि। इन सबका आधार संख्यात्मक व गुणात्मक, दोनों ही हो सकता है। वस्त्रों में आकर्षण तभी उत्पन्न होगा जब एक समूह में बना डिजाइन अनुपात में हो।

2. सन्तुलन : सन्तुलन से वस्त्र या परिधान में विश्रामदायक भाव आते हैं। सन्तुलन प्राय: वस्त्र की मध्य रेखा से देखा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी डिजाइन या वस्त्र का प्रत्येक भाग व्यवस्थित एवं समान भार का होना चाहिये ताकि वस्त्र सुन्दर, आकर्षक एवं सन्तुलित दिखाई दे। रंगों तथा आकृतियों को केन्द्र बिन्दु के चारों तरफ इस प्रकार रखा जाये कि केन्द्र के प्रत्येक ओर समान आकर्षण रहे। सन्तुलन एक आरामदायक प्रभाव है। यह दो प्रकार का होता है–

(i) **औपचारिक सन्तुलन :** जब डिजाइन के सभी भागों में आकर्षण, रचना व अलंकरण समान या बराबर होते हैं।

(ii) **अनौपचारिक सन्तुलन :** इसमें डिजाइन के सभी भाग बराबर नहीं होते, परन्तु केन्द्रीय स्थिति से परिधि की ओर सन्तुलन में होते हैं।

3. लय : लय डिजाइन का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। लय का अर्थ गति से होता है। जैसे लय प्रकृति और संगीत में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है ठीक वैसे ही डिजाइन में लय का अर्थ एक ऐसे मार्ग से है जो रंग, रचना, रेखा, आकार और अलंकरण पर हमारी आँखों को गति प्रदान करें। वस्त्र सज्जा में लय उत्पन्न करने के लिये रंग, रचना, रेखा, आकार, बनावट, आकृति आदि में पुनरावृत्ति, स्वरीकरण तथा विकिरण का प्रयोग करना चाहिये। सम्पूर्ण वस्त्र में डिजाइन का संयोजन इतना रोचक होना चाहिये कि उस पर दृष्टि लयबद्ध गति से फिसले। वस्त्र में लय उत्पन्न कर उनमें सुन्दरता व आकर्षण लाया जा सकता है।

4. अनुरूपता : वस्त्र सज्जा में एकरूपता एवं अनुरूपता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वस्त्र पर डिजाइन का निर्माण करते समय रेखा, आकार, रंग तथा बनावट के उपयोग में एकरूपकता के साथ वस्त्र सज्जा करते समय सभी भागों की शैली, आकार, रंग व बनावट एक–दूसरे से सम्बन्धित होने चाहिये।

5. दबाव : प्रत्येक वस्त्र सज्जा में एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र प्रसंग होनी चाहिये और इसे ही दबाव कहा जाता है। सरल शब्दों में कहें तो किसी एक बिन्दु पर विशेष बल देना ताकि आकर्षण उत्पन्न किया जा सके। वस्त्र सज्जा में यदि किसी डिजाइन के चारों तरफ रिक्त स्थान छोड़ा जाये या डिजाइन किसी विशेष स्थान जैसे–गले के चारों तरफ बनाई जाये तो उस पर दृष्टि ठहरती है और वस्त्र व डिजाइन का आकर्षण केन्द्र बढ़ जाता है। वस्त्र पर एक से अधिक डिजाइन बना दिये जाये तो आकर्षण कम और 'दबाव केन्द्र' भी नहीं होगा।

उपरोक्त कला के तत्त्वों और डिजाइन के सिद्धान्तों का अध्ययन करने के पश्चात् आप उचित डिजाइन वाले वस्त्रों का चयन कर सकेंगे। वस्त्र सज्जा करते और करवाते समय डिजाइन के सिद्धान्तों और कला के तत्त्वों का उपयोग करके वस्त्र में सुन्दरता की वृद्धि कर सकते हैं, जिससे उचित डिजाइन के वस्त्र पहनने से व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य में अभिवृद्धि हो सके। अत: कह सकते हैं कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब 'वस्त्र' होते

हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब वस्त्र होते हैं।
2. वस्त्र का प्राथमिक कार्य व्यक्तिगत सुरक्षा व आराम प्रदान करना है।
3. वस्त्र का द्वितीयक कार्य पहचान, मानसिक सन्तोष, सामाजिक स्तर, प्रशंसा और विविधता प्रदान करना।
4. विभिन्न रेखाओं के प्रयोग द्वारा नमूने की लम्बाई, चौड़ाई और कोमलता को दर्शाया जाता है।
5. रंग का मुख्य स्रोत सूर्य का प्रकाश है एवं रंगों का सौन्दर्यात्मक, संवेगात्मक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है।
6. कला के चार तत्त्व हैं-रेखा, आकार, रंग एवं बनावट। इनके उचित संयोजन से डिजाइन का निर्माण होता है।
7. डिजाइन के सिद्धान्त-अनुपात, सन्तुलन, लय, अनुरूपता, दबाव है।
8. कला के तत्त्वों एवं डिजाइन के सिद्धान्तों के उचित उपयोग व आधार से आकर्षक व सही डिजाइन का निर्माण किया जा सकता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) वस्त्र का प्राथमिक कार्य है :

(अ) पहचान (ब) प्रशंसा

(स) सुरक्षा (द) विविधता

(ii) कला का तत्त्व है :

(अ) दबाव (ब) अनुरूपता

(स) लय (द) आकार

(iii) समतल रेखा दर्शाती है :

(अ) ऊँचाई (ब) गहराई

(स) लम्बाई (द) चौड़ाई

(iv) रंग का मुख्य स्रोत है :

(अ) प्रकाश (ब) सूर्य का प्रकाश

(स) प्रकृति (द) इनमें से कोई नहीं

(v) लय का अर्थ होता है :

(अ) आकार (ब) रंग

(स) गति (द) विश्राम

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) वस्त्र पर छपाई हेतु .... की आवश्यकता है।

(ii) वस्त्र का प्राथमिक कार्य .... एवं .... है।

(iii) रेखाओं के संयोजन से .... बनता है।

(iv) बनावट का .... के द्वारा पता लगा सकते हैं।

(v) सन्तुलन दो प्रकार का .... एवं .... होता है।

(vi) दबाव से तात्पर्य .... पर विशेष बल देना है।

(vii) वस्त्र व्यक्ति के .... का प्रतिबिम्ब होता है।

3. बनावट से तात्पर्य क्या है।
4. वस्त्र के द्वितीयक कार्यों को समझाइये।
5. सन्तुलन नमूने को किस प्रकार प्रभावी बनाता है? स्पष्ट कीजिये।
6. आकार का निर्माण किस प्रकार होता है? यह कितने प्रकार के होते हैं।
7. 'डिजाइन' निर्माण हेतु किन-किन रेखाओं का उपयोग किया जाता है? विस्तृत वर्णन कीजिये।
8. एकि ठगनीव म ोटीम हिलाके ि लयेस ाड़ीह ेतुि कसप्र कारके डिजाइन का चयन करेंगी।
9. एक लम्बी लड़की के लिये किस प्रकार के डिजाइन का वस्त्र चयन करेंगी।

उत्तरमाला :

1. (i) स (ii) द (iii) द (iv) ब (v) स
2. (ii) नमूने (ii) सुरक्षा एवं आराम

(iii) आकार (iv) स्पर्श

(v) औपचारिक, अनौपचारिक (vi) केन्द्र बिन्दु

(vii) व्यक्तित्व।